फरीदाबाद

मजदूर समाचार

हर जगह, सब से, जब भी समय मिले

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **317** | *1/–* | *नवम्बर* **2014**

किन क्षमताओं को ~~बदलें~~ बल दें ?

किसी व्यक्ति, समूह, सन्दर्भ, जगह, विचार, कदम, धारा, अभिव्यक्ति, कोशिश, प्रयोग, प्रकाशन, कविता को क्षमता-कपैसिटी से, क्षमता-कपैसिटी में देखें तो कैसे दिखेंगे ?

क्षमता का ये सवाल पिछले कुछ वर्षों से तरह-तरह की बातचीत में उठता रहा है। यह प्रश्न एक तरह से व्यक्तिगत-पर्सनल भी है, और सामुहिक-सार्वजनिक भी। इसका बार-बार उठना दर्शाता है कि जीवन को एक नये, ताजे, अलग तरीके से परिभाषित करने की बहस चल रही है। ये बहस दोस्तों के बीच है, परिवारों के भीतर है, प्रेमियों के बीच है, कार्यस्थलों के उपजाऊ टैन्शनों में है। ये मशीनों के साथ जूझते हुये भी है, पशुओं संग व्यवहार में भी है, मॉल में टहलते हुये भी है, और पक्षियों की उड़ान को सराहने में भी है।

क्षमता से जुड़ा ये सवाल उन सवालों में से है जिन्हें एक क्षण की मुलाकात में भी पाया जा सकता है, पूरे जीवन के दौर में भी देखा जा सकता है, और पीढियों के पार भी दिखता है। क्षण, जीवन, पीढी को यह प्रश्न अपरिचित रूप में, अचंभित कर देने वाले तरीके से उभार सकता है।

क्षमता से उभरा ये सवाल उन सवालों में से भी है जिनसे जितने भी कोणों से, पहलुओं से टकराया जाये, उतने ही और अपरिचित कोण व पहलू उग्रता से उजागर होते रहते हैं। इस प्रश्न के पूछे जाने से खुलता हर पहलू, प्रत्येक कोण एक कगार में परिवर्तित हो जाता है जो जीवन की बहुकोणीय भिन्नता को संबोधित करने का न्यौता देता है।

क्षमता में मगन ये सवाल उन सवालों में से भी है जो किसी माहौल, दायरे, परिवेष की परिधि में नहीं बँधे हैं। यह प्रश्न व्यक्ति, समूह, पृथ्वी, मशीन, पशु, शिल्प, बोली के संबंधों की असंख्य संभावनाओं को मुक्त कर देता है।

करते है

✶ प्लॉट 11 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित ***ओरियन्ट इलेक्ट्रिक*** फैक्ट्री में 20 अक्टूबर को 11 बजे टी-ब्रेक के बाद फैन प्लान्ट में ठेकेदारों के जरिये रखे 350 मजदूर कार्य आरम्भ करने की बजाय पार्क में जा कर बैठ गये। पँखा असेम्बली की पाँचों लाइनें बन्द। जो 15-20 स्थाई मजदूर हैं वे लाइनों पर बैठे रहे। कम्पनी के 10-12 अधिकारी फैक्ट्री पार्क में पहुँचे। काम क्यों बन्द कर दिया है? ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को भी बोनस चाहिये। दस साल से क्यों नहीं माँगा? अब तो माँग रहे हैं। जनरल मैनेजर सरकारी मीटिंग में गुड़गाँव गया है, नया हूँ-मालूम नहीं है, अभी काम शुरू करो, साँय बात करना। कोई मजदूर नहीं उठा। इस बीच 20 सफाई कर्मी भी आये और साथ बैठ गये। साहबों ने आश्वासन दे कर उन्हें उठाया। सी एफ एल प्लान्ट के मजदूर अपने गेट पर एकत्र हो कर झाँकने लगे और स्थिति उनके भी आ मिलने की थी। ऐसे में कुछ पुराने मजदूर साहबों की बातों में आ कर खड़े हो कर चल दिये तो अहिस्ता-आहिस्ता बाकी लोग भी अन्दर चले गये। भोजन अवकाश के समय सफाईकर्मी नये साहब से उलझ रहे थे और 1 बजे वे सब फैक्ट्री गेट के बाहर जा कर बैठ गये। असेम्बली लाइनों पर गन्दगी के ढेर लगने लगे थे जब 4-4½ बजे सफाई कर्मी अन्दर आये। इस सब पर एक युवा मजदूर के विचार : काम को लाइन पर बन्द नहीं करना चाहिये क्योंकि एक-एक को पकड़ कर, टारगेट बना कर साहब दबाव डालेंगे – तू शुरू कर, हम देखेंगे आगे कौन रोकता है। ऐसे में मजदूरों के लिये काम को बन्द करना मुश्किल होता है। जबकि, टी-ब्रेक में बातचीत कर के लाइनों से दूर कहीं पार्क आदि में इकट्ठे बैठना ठीक रहता है। ऐसे में एक-एक करके साहब दबाव नहीं बना सकते।

✶ ***प्रिमियम मोल्डिंग मजदूर :*** '' 185 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 250 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। घाटा चल रहा है कह कर मैनेजमेन्ट ने दिवाली पर बोनस नहीं दिया। दिवाली बाद, 28 अक्टूबर को सुबह ही मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। दोपहर बाद 3 बजे बोनस दिया तब फैक्ट्री में उत्पादन आरम्भ हुआ।''

✶ प्लॉट डी-120 ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेज-1, दिल्ली स्थित ***साहब एक्सपोर्ट/समरथ बाइंग हाउस*** में 200 वरकर महिलाओं के लिये शिफोन, सिल्क के बहुत महँगे गाउन, टॉप, स्कर्ट, जैकेट बनाते हैं। कुशल, बहुत कुशल मजदूर हैं – बड़े साहब कहते हैं कि पी.एचडी. हो। लेकिन सिलाई कारीगरों को कम्पनी दिल्ली सरकार द्वारा कुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन देती है और हैण्ड इम्ब्राइड्री कारीगरों को तो अकुशल श्रमिक वाली तनखा। कपड़ा भी आर्डर देने वालों का होता है... कभी आर्डर कम तो कभी कपड़ा नहीं पहुँचा है कह कर कई मजदूरों को बीच-बीच में हफ्ता-दस दिन का ब्रेक देते रहते हैं। इधर सितम्बर-आरम्भ में 30-35 वरकरों को एक सप्ताह का ब्रेक दिया तो एक बन्दे के साथ मजदूर श्रम विभाग गये। शिकायत की। उत्तर में मैनेजमेन्ट बोली कि ब्रेक दी ही नहीं है। लिख कर दो कहने पर लिख कर दिया। ओवर टाइम डेढ की दर से देते हैं कहा तो मैनेजमेन्ट बोली कि दुगुनी दर से देते हैं। लिख कर दो कहने पर लिख कर दिया। इस सब में 4 दिन लगे और इन 30-35 को बैठे दिनों के पैसे कम्पनी ने दिये। इधर अक्टूबर-अन्त में हैण्ड इम्ब्राइड्री कारीगरों की शिकायत की जाँच के लिये श्रम अधिकारी फैक्ट्री पहुँचे।

✶ 20/3 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित नोरदर्न इण्डिया आयरन एण्ड स्टील फैक्ट्री के स्थान पर अब ***नोरदर्न कॉम्पलैक्स*** है जहाँ 25-30 फैक्ट्रियाँ हैं। सीवर जाम होता रहता और आने-जाने का पूरा रास्ता एक फुट तक रसायन युक्त पानी से भरा रहता। बरसात में तो महीनों यह स्थिति रहती। इधर 26 सितम्बर को सुबह 8 बजे ड्युटी के लिये पहुँचे मजदूर कॉम्पलैक्स के बाहर खड़े हो गये। रात की शिफ्ट वाले कॉम्पलैक्स के अन्दर ही डटे। प्रबन्धक असहाय। पुलिस। यह स्थिति 1½ बजे तक रही। 25-30 फैक्ट्रियों के मजदूरों ने मिल कर कदम उठाया। 25-30 फैक्ट्रियों में काम करते 3-4 हजार मजदूरों ने उत्पादन ठप्प किया। अगले दिन सफाई करवाई गई और तब से रास्ता साफ है।

✶ भाभी उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव में ***धीर ग्लोबल*** फैक्ट्री में काम करती हैं। उन्होंने बताया कि मजदूरों ने तीन दिन उत्पादन बन्द रखा तब दिवाली के एक दिन पहले, 22 अक्टूबर को सितम्बर की तनखा दी।

✶ प्लॉट 10 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित ***बाकमैन इन्डस्ट्रीज*** में दिवाली से पहले, 22 अक्टूबर को मजदूरों को उपहार में कम्पनी हल्के शॉल देने लगी। वरकरों ने शॉल लेने से इनकार कर दिया। आज, 25 अक्टूबर को शॉल की जगह 500 रुपये दिये। जिन थोड़े-से नये मजदूरों ने शॉल ले ली थी, उन्हें 200 रुपये अतिरिक्त दिये। दिवाली पर 23-24 की छुट्टी रही पर 24 के बदले में रविवार, 26 अक्टूबर को ड्युटी का नोटिस कम्पनी ने 22 को ही लगा दिया था। आज 25 को साँय 6 बजे टी-ब्रेक में एकत्र हुये, चर्चा की, तय किया कि 26 को कोई मजदूर ड्युटी के लिये नहीं पहुँचेगा। सुपरवाइजर को भी खबर नहीं होने दी – कम्पनी को 26 को सुबह पता चलेगा जब कोई भी मजदूर नहीं पहुँचेगा। बाकमैन इन्डस्ट्रीज में 100 वरकर सुबह 8½ से रात 8 बजे की शिफ्ट में ग्राइन्डिंग, वैल्डिंग, ड्रिल, पेन्ट, पावर प्रेस, कटिंग मशीन, फिटर का काम करते हैं। जो दो फोरमैन हैं उन्हें ही ठेकेदार बना कर सब मजदूरों को उनके खातों में डाल रखा है।

औ

✶ ***मुंजाल किरियु ,*** प्लॉट 192 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री के 225 स्थाई मजदूर 24 सितम्बर से फैक्ट्री गेट के बाहर बैठे हैं। फैक्ट्री में उत्पादन कार्य हो रहा है। इसका विवरण मजदूर समाचार के अक्टूबर अंक में है। इधर अक्टूबर माह भी बीत गया है। नवम्बर-आरम्भ में एक मजदूर से बात की तो श्रम विभाग आदि में तारीख-दर-तारीख पर उन्होंने अपनी झल्लाहट जाहिर की। कुछ समय पहले ही ***बजाज मोटर, बैक्सटर, ऑटोलिव*** फैक्ट्रियों में योजना बना कर, तैयारी करके, उकसा कर मजदूरों को बाहर बैठा कर, तारीखों में थका कर, कमजोर कर कम्पनियों ने अपनी शर्तें थोपी। ऐसा मुंजाल किरियु में नहीं हो इसके लिये जरूरी है कि मुंजाल किरियु स्थाई मजदूर अलग-थलग नहीं रहें और सरकारी अधिकारियों तथा नेताओं के चक्कर लगाने में अपनी ऊर्जा को नहीं गवायें। एक फैक्ट्री के मजदूरों के मामले को हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों का मामला बनाना बनता है, इसके लिये कदमों पर विचार करना, कदम उठाना बनता है।

✶ ***ईस्टर्न मेडिकिट*** की उद्योग विहार, गुड़गाँव स्थित 5 फैक्ट्रियों से मई 2012 से मैनेजमेन्ट गायब है। वहाँ काम करते 1189 स्थाई मजदूर दर-दर भटक रहे हैं। इस दौरान उन्होंने अफसरों, नेताओं, न्यायालयों के जरिये राहत के अनेकानेक प्रयास किये हैं। परिणाम शून्य है..... शून्य से भी कम है, नेगेटिव है। ईस्टर्न मेडिकिट के मजदूरों का अनुभव भी यही कह रहा है कि अफसरों-नेताओं-अदालतों के फेर में मजदूर अपने समय तथा ऊर्जा को व्यर्थ में नहीं गँवायें। सीधे-सीधे तौर पर मजदूरों के अपने अन्य मजदूर हैं, एक फैक्ट्री के मजदूरों के अपने सगे हजारों फैक्ट्रियों के मजदूर हैं। मजदूर पक्ष को उभारना और बढाना बनता है।

✶ ***सेबरोस ऑटो*** की सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में बिजली का करन्ट लगने से सितम्बर माह में एक मजदूर की मृत्यु हो गई। इधर 28 अक्टूबर को सेबरोस की प्लॉट 181 सैक्टर-5, आई एम टी स्थित फैक्ट्री में रात की शिफ्ट में कार्यरत एक मजदूर की मृत्यु हो गई। दोनों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और महीने के तीसों दिन काम होता है।

✶ ***लक्सर मजदूर :*** '' प्लॉट 867 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 10-15 स्थाई मजदूर और 200 कैजुअल वरकर पैन बनाते हैं। कैजुअलों का 6 महीने में ब्रेक कर देते हैं। कैजुअल वरकरों का महीने में 100 से 150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान मात्र 13 रुपये प्रतिघण्टा।''

✶ ***एम टेक क्रैन्क शाफ्ट,*** 53-54 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 60 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***जोहन डीयर, स्वराज, एस्कोर्ट्स, सोनालिका, न्यू हॉलैण्ड*** ट्रैक्टरों की क्रैन्क शाफ्ट बनाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को त्यौहारी छुट्टियों के पैसे नहीं देते, उस रोज की तनखा काट लेते हैं।

अधेड़ मजदूर : एस्कोर्ट्स

तीस वर्ष पहले लगा तब मैनुअल काम ज्यादा था – लेथ, मिलिंग, ड्रिलिंग, कैपेसिटन। 1992 से सी एन सी मशीनें लगने लगी। पहले जहाँ फिटर, पेन्टर, टर्नर, ऑपरेटर, असिस्टेन्ट फोरमैन, टाइपिस्ट, स्टैनो कहलाते थे वहाँ कॉमन डेजिगनेशन बना – सब टीम मेम्बर। और, कैंटीन कर्मियों, सफाई कर्मियों, चपरासी, क्लर्कों को शॉप फ्लोर पर मशीनों पर लगाया गया – सब को डायरेक्ट वर्कमैन बना दिया। भर्ती 1992 से बन्द और मैनपावर घटाना आरम्भ। हर त्रिवर्षीय यूनियन-मैनेजमेन्ट समझौता इधर अपने संग स्थाई मजदूर कम करने के लिये नई वी आर एस स्कीम लाया। वैसे भी, दस से ज्यादा दीर्घकालीन समझौते देख चुका हूँ। हर एग्रीमेन्ट में उत्पादन बढाओ, पैसे पाओ के संग बीमार तथा कम एफिशियेन्सी वाले मजदूरों को निकालने की बातें होती हैं। आयु बढने के संग नौकरी से निकाल दिये जाने की सम्भावना बढती जाती है। पैसे कम होते हैं, उत्पादन ज्यादा बढता है, कुल मिला कर एग्रीमेन्ट से फायदा कम्पनी को होता है। इन तीस वर्षों में एस्कोर्ट्स के सब प्लान्टों में स्थाई मजदूरों की सँख्या एक चौथाई हो गई है और उत्पादन छह गुणा बढा है। व्हर्लपूल की तरह एस्कोर्ट्स में झटके से कम्पनी मजदूर नहीं निकाल पाई इसलिये वी आर एस की श्रँखला और भर्ती नहीं करने का सिलसिला चला है। इधर 3-4 वर्ष से रिटायर होने पर बच्चों को रख रहे हैं पर एक तिहाई-एक चौथाई तनखा पर और फिर 3-5 वर्ष ट्रेनी की तलवार। एस्कोर्ट्स में सब जगह कान्ट्रैक्चुअल लेबर का सिलसिला आरम्भ हो गया है। ट्रैक्टर डिवीजनों में स्टोरों में एक भी स्थाई मजदूर नहीं रहा, सब टी वी एस ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे हैं। आगे से लाइन पर, प्रोडक्ट बनाने में एक स्थाई मजदूर 10 कैजुअल वरकरों को देखेगा और 5 सुपरवाइजरों की जगह 1 सुपरवाइजर रहेगा। व्यवस्था बहुत ज्यादा भ्रष्ट हो चुकी है। कुछ वर्ष पहले हुये यूनियन चुनाव में बहुत करीब के लोग खड़े हुये थे। हिसाब लगाया तो प्रति वोटर (स्थाई मजदूर) 1200 रुपये खर्च हुआ। हारने वाले का बी पी हाई हो गया। कॉमन सैन्स है, यह तो अन्धे को भी दिखता है, यूनियन लीडर बनने, पार्षद-विधायक-सांसद बनने के लिये काहे को खर्च कर रहे हैं। एस्कोर्ट्स की ही बात करें तो, शायद ही ऐसा कुछ हो जो लीडरों की सहमति के बिना होता हो। वर्दी, जूते, मिठाई, उपहार, वाहन लगाने, कच्चे माल की सप्लाई, वैन्डरों से आते पुर्जे..... फैक्ट्री में कुछ सीटें होती हैं जिनकी वैन्डरों से सीधी डीलिंग होती है – वहाँ बन्दा वही बैठ सकता है जो लीडरों का हो, नोरमल बन्दे को वहाँ नहीं बैठने देते।

★ ***ऋचा ग्लोबल,*** प्लॉट 232 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे 250 मजदूरों को घाटा बता कर दिवाली पर बोनस नहीं दिया। वैसे भी, अकुशल श्रमिक के लिये न्यूनतम वेतन 5640 रुपये, पर हैल्परों को 5200-5300 रुपये देते हैं। सिलाई कारीगरों को तनखा 6500-7000 बोलते हैं पर देते 6000-6200 रुपये ही हैं।

★ ***पोलीपैक,*** 194 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव में ठेकेदार के जरिये रखे 60 मजदूरों को दिवाली पर बोनस नहीं दिया।

निमंत्रण

नवम्बर में 30 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल प ावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

युवा मजदूर : मारुति सुजुकी

टेम्परेरी वर्कमैन (टी डब्लू) की भर्ती लगातार चलती रहती है क्योंकि लोग रोज छोड़ते रहते हैं। मारुति सुजुकी एच आर वाले हिमाचल, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब में आई टी आई परिसरों में जा कर भर्ती करते रहते हैं। इस वर्ष अप्रैल में मारुति सुजुकी के लिये लिखित परीक्षा की सूचना बनारस, गाजीपुर, बलिया, आजमगढ, जौनपुर, कानपुर के स्थानीय अखबारों में छपी। राजकीय आई टी आई करौंधी, वाराणसी में हुई परीक्षा में ढाई हजार लड़के बैठे थे और ज्यादातर पास हो गये। फिर जून-जुलाई में साक्षात्कार हुये और करीब 2200 चुन लिये गये। इन्टरव्यू के समय मारुति सुजुकी अधिकारियों ने 15, 200 रुपये तनखा बताई। गुड़गाँव तथा मानेसर फैक्ट्रियों में एक सप्ताह के प्रशिक्षण के समय भी तनखा 15,200 बताई और कहा कि ई.एस.आई., पी.एफ., कैंटीन के पैसे कट कर 13,500 रुपये मिलेंगे। वास्तव में 12,000 के करीब मिले तो अधिकारियों से पूछा। कोई कहता नियम जो हैं वो सब के लिये हैं, तुम्हारे लिये अलग नहीं हैं, सब को ऐसे ही मिलता है। सुपरवाइजर और फोरमैन टालते हैं, कहते हैं कि ऊपर ही ऊपर पैसे कट जाते हैं, बाद में मिलेंगे, अगले महीने-अगले महीने मिलेंगे। परमानेन्ट वरकर कहते हैं कि तुम टेम्परेरी वर्कमैन हो, तुम्हारे बारे में हम नहीं जानते, तुम खुद एच आर से बात करो। एच आर वाले कहते हैं कि सुपरवाइजर से बात करो। यह तो सीधे-सीधे धोखाधड़ी है।

टेम्परेरी वर्कमैन के तौर पर 7 महीने के लिये भर्ती करते हैं। कहते हैं कि काम और व्यवहार ठीक रहा तो दूसरी बार 7 महीने के लिये टेम्परेरी वर्कमैन के तौर पर बुलाया जायेगा। दूसरी बार भी काम और व्यवहार ठीक रहा तो परमानेन्ट करने के लिये बुलायेंगे..... पर किसी को बुलाते नहीं। पहली बार टेम्परेरी वर्कमैन का कार्य करके कितने ही चले गये, दूसरी बार के लिये बुलाते ही नहीं। धोखा है।

तनखा में और भी पेंच हैं। बेसिक 5400 है और बाकी सब भत्ते हैं। कमरा किराया 1400, वर्दी देखभाल 1250, कनवेयन्स 1000, अतिरिक्त कनवेयन्स 600, भोजन भत्ता 800, और गुड वर्क रिवार्ड 2600 रुपये..... महीने में एक छुट्टी करने पर इन 2600 में से 1300 कट जाते हैं और दो छुट्टी करने पर पूरे 2600 काट लेते हैं।

इन तीन महीनों में ही पूर्वांचल से लाये गये सब लड़के काम करते-करते परेशान हो गये हैं। फैक्ट्री में हमेशा भागमभाग रहती है। काम करने का तरीका ठीक नहीं है – कभी यहाँ लगा दिया, कभी वहाँ दूसरी लाइन पर लगा दिया। सीखने की परेशानी, माहौल को समझने की दिक्कत – हमेशा डर रहता है कि किसी कम्पोनेन्ट से चोट न लग जाये। और फिर, एक बन्दे से तीन का काम लेते हैं। गुड़गाँव और मानेसर मारुति सुजुकी फैक्ट्रियों के सभी विभागों से टेम्परेरी वर्कमैन नौकरी छोड़ गये हैं, जून-जुलाई में लगे 2200 में से आधे छोड़ गये हैं।

मारुति सुजुकी फैक्ट्रियों में कार्यस्थलों पर लगभग 20 प्रतिशत स्थाई मजदूर, 40 प्रतिशत टेम्परेरी वर्कमैन, और 40 प्रतिशत ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे जाते मजदूर काम करते हैं।

★ *अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।*

★ *बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें ।*

★ *महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

6 करोड़ का नुकसान कर दिया

मजदूर समाचार के अक्टूबर अंक में 12 सितम्बर को महिला मजदूरों की अगुवाई में ***जय उशिन*** फैक्ट्री में उत्पादन बन्द करने और 24 सितम्बर को काम आरम्भ करने के दौरान का विवरण है।

प्लॉट 4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित जय उशिन लिमिटेड की तीन मंजिला फैक्ट्री में 390 महिला मजदूर लॉक सैट विभाग में, 350 स्विच डिपार्ट में, 50 तीसरी मंजिल पर चार पहिया वाहन लॉक विभाग में, और 25 मोल्डिंग में काम करती हैं। फैक्ट्री में 815 महिला मजदूरों के संग 300 पुरुष मजदूर भी हैं। डरी-सहमी मैनेजमेन्ट 12 से 23 सितम्बर के दौरान 170 महिला मजदूरों को ही फैक्ट्री में ला सकी थी। रियायतें दे कर कम्पनी ने 12 दिन से फैक्ट्री के बाहर डटे सब स्त्री-पुरुष मजदूरों को 24 सितम्बर से उत्पादन आरम्भ करने के लिये राजी किया।

जब बाहर थे तब तो दो पक्ष आमने-सामने थे ही, अन्दर जाने के बाद भी दो पक्ष साफ-साफ बने रहे हैं हालाँकि पहले आगे हुई 3 पीछे हट गई हैं। एक उच्च अधिकारी फैक्ट्री में बन्दूक ले कर घूमने लगा है। पानी-पेशाब से रोकने के लिये वहाँ गेट पर सुपरवाइजर तैनात। शिफ्ट छूटने से कुछ पहले मैनेजर का लॉकर स्थान पर आ कर खड़ा होना। अन्दर रही 170 को बाहर रहने वालों से बात करने से मनाही। और, 27 सितम्बर को एक पुरुष मजदूर दोपहर 2 से रात 10 की शिफ्ट में था जब उसे माँ के बीमार होने की सूचना मिली। मैनेजर से कह कर 4 बजे वह फैक्ट्री से निकला। अगले रोज उसे ड्युटी पर नहीं लिया। उसे वापस लेने के लिये 29 सितम्बर को वरकर एच.आर. विभाग गये तो वहाँ बोले कि मैनेजर मना कर रहा है। मजदूर एकत्र हो कर 30/9, 1/10, 2/10 को भी गये पर मैनेजमेन्ट नहीं मानी। साहब बोले कि तुम्हें जाना है तो तुम भी जाओ.....

1 से 11 सितम्बर तक किये ओवर टाइम के पैसे मजदूरों ने 27 सितम्बर को माँगे तो साहब लोग बोले पहले नारे लगा लो, फिर ले लेना। चार-पाँच बार एकत्र हो कर गये तब ओवर टाइम के पैसे दिये। महिला मजदूरों को दुगुनी दर से और पुरुष मजदूरों को कुछ कम रेट से, 55 रुपये प्रति घण्टा और 40-46 रुपये प्रति घण्टा।

सितम्बर की तनखा 7 अक्टूबर तक नहीं दी। एकत्र हो कर 10 अक्टूबर को मजदूर एच. आर. विभाग गये। साहब बोले कि फलाँ तुम्हें तनखा देंगे तो वरकरों ने उन से ही काम करवा लेने को कहा। साहब लोग डर गये और ठेकेदारों को बुला कर अगले दिन से तनखा बँटवानी शुरू कर दी।

सुपरवाइजर बोला मीटिंग मत किया कर, कभी भी पत्ता काट देंगे। मजदूर द्वारा यह कहने पर कि काट कर देख, सुपरवाइजर उन्हें एच.आर. विभाग ले गया और बोला कि यह बहुत ज्यादा बोलती है। ''क्यों?'' पर महिला मजदूर बोली कि मुँह तो बोलने के लिये है, गलत के खिलाफ बोलने के लिये है। शान्ति से काम करो या जाओ..... जवाब में धमकी से काम नहीं करेंगे कहा तो साहब लोग डर गये। वरकर की जगह बदल दी।

फैक्ट्री को चलते दस वर्ष हो गये हैं पर कम्पनी बोनस नहीं देती थी। सितम्बर में काम बन्द करने का एक असर यह भी हुआ है कि दिवाली से पहले सब मजदूरों को बोनस दे दिया।

19 अक्टूबर वाले रविवार को मजदूरों ने इसलिये काम किया कि बदले में 22 को छुट्टी रहेगी। चर्चा 21 को कम्पनी कार्यक्रम की थी – नाचना, गाना, नाश्ता होगा और 3 बजे उपहार बँटेंगे। निर्देश फैक्ट्री में सलवार-कमीज पहनने का है पर 21 को कईयों ने साड़ी पहनी। सुबह से ही बराये-नाम काम और 1 बजते-बजते बिलकुल बन्द। सुपरवाइजरों से मजदूरों की तू-तड़ाक। दो बजे कम्पनी ने नोटिस लगाया कि 22 को भी सामान्य कार्य दिवस रहेगा.... मजदूरों ने नोटिस फाड़ दिया, इकट्ठे हो कर एच.आर. विभाग पहुँचे, गिफ्ट देने को कहा। साहब घबरा गये, बोले गिफ्ट आई नहीं हैं, कल आयेंगी, 22 को एक बजे तक काम करना, पूरे दिन का ओवर टाइम दिया जायेगा। कम्पनी में फंक्शन नहीं, 22 को भी साड़ी पहन कर गई और उपहार ले कर फैक्ट्री से निकलती गई।

दिवाली की छुट्टियों के बाद 27 अक्टूबर को फैक्ट्री खुली। दिन-भर सब सामान्य। शिफ्ट छूटने से कुछ समय पहले मैनेजर आया और लॉकर रूम में गई महिला मजदूरों को डाँटने लगा। वरकरों ने विरोध किया। अगले रोज, 28 अक्टूबर को तीन महिला मजदूरों को फैक्ट्री के अन्दर नहीं जाने दिया। बोले कि तुम ने 6 करोड़ का नुकसान कर दिया, अब तुम अन्दर काम नहीं कर सकती। मजदूरों ने विरोध में 11 बजे तक काम बन्द रखा। फिर 29 अक्टूबर को इन तीन में से एक महिला मजदूर के लिये रेवाड़ी में बस नहीं रोकी, दूसरी को कोसली में बस से उतार दिया, और तीसरी को पटौदी चौक पर बस से उतार दिया। तीन के रोके जाने के दिन से हर रोज मजदूर एकत्र हो कर एच. आर. विभाग जाते हैं, 28-29-30-31 अक्टूबर और 1 नवम्बर को वरकर इकट्ठे हो कर फैक्ट्री में साहबों के पास गये। साहब लोग : उन तीन को नहीं लेंगे, तुम्हें जाना है तो तुम भी जाओ..... मजदूरों को मोबाइल पर बात करने से रोकने के लिये कम्पनी ने फैक्ट्री में जैमर लगा दिया है।■

हरियाणा सरकार द्वारा 1 नवम्बर 2014 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 7400 रुपये मासिक (8 घण्टे के 284 रुपये 61 पैसे)

अर्ध-कुशल ***अ*** 7770 रुपये मासिक (8 घण्टे के 298 रुपये 84 पैसे)

अर्ध-कुशल ***ब*** 8160 रुपये मासिक (8 घण्टे के 313 रुपये 84 पैसे)

कुशल श्रमिक ***अ*** 8570 रुपये मासिक (8 घण्टे के 329 रुपये 61 पैसे)

कुशल श्रमिक ***ब*** 9000 रुपये मासिक (8 घण्टे के 346 रुपये 15 पैसे)

उच्च कुशल श्रमिक 9450 रुपये मासिक (8 घण्टे के 363 रुपये 46 पैसे)

हल्का वाहन ड्राइवर 9000 रुपये मासिक (8 घण्टे के 346 रुपये 15 पैसे)

भारी वाहन ड्राइवर 9450 रुपये मासिक (8 घण्टे के 363 रुपये 46 पैसे)

गार्ड बिना शस्त्र 7770 रुपये मासिक (8 घण्टे के 298 रुपये 84 पैसे)

शस्त्र के साथ गार्ड 9000 रुपये मासिक (8 घण्टे के 346 रुपये 15 पैसे)

सेक्युरिटी सुपरवाइजर / इन्सपैक्टर/सेक्युरिटी अफसर 9450 रुपये मासिक (8 घण्टे के 363 रुपये 46 पैसे)

सफाई कर्मचारी 7900 रुपये मासिक (8 घण्टे के 303 रुपये 84 पैसे)

डाटा इन्ट्री ऑपरेटर 8570 रुपये मासिक (8 घण्टे के 329 रुपये 61 पैसे)

स्टाफ : दसवीं से कम 7770 रुपये मासिक (8 घण्टे के 298 रुपये 84 पैसे)

दसवीं पास पर स्नातक से कम 8160 रुपये मासिक (8 घण्टे के 313 रुपये 84 पैसे)

स्नातक और अधिक 8570 रुपये मासिक (8 घण्टे के 329 रुपये 61 पैसे)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।